शोध-सारांश

भारत-पाकिस्तान विभाजन आज भी दुनिया की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी कही जा सकती है। धर्म, राजनीति, साम्राज्यवाद, पुरुषत्व के मंच पर खेला गया यह एक ऐसा खौफनाक नाटक था, जिसका पर्दा आज भी गिरा नहीं है। नए पात्र आते हैं और नाटक का कथानक फिर आगे बढ़ जाता है। कुछ अंतराल बीतने के बाद जब इसका आकलन किया जाता है तो पता चलता है कि हर बार आम जन ही अपना कुछ या सब कुछ खोता आया है। अहिंसा की जिस विचारधारा का जन्म ही इस भू-भाग में हुआ हो और जिसे साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ाई का सबसे अचूक हथियार बना कर प्रस्तुत किया गया हो, उसके इतिहास में हिंसा की ऐसी इबारतें लिखी गयी जिसका आज भी पटाक्षेप नहीं हुआ है।

उपन्यास ज़िन्दगी के सबसे नजदीक की साहित्यिक विधा है। देश और काल के परिवर्तन सन्दर्भों से जुड़े होने के कारण उपन्यास का रूप भी बदला है, किन्तु यह निश्चित है कि सृजनात्मक गद्य में आज वह लोकप्रियता के शिखर पर है। घृणा और धार्मिक विद्वेष के आवर्त में फंसे मनुष्य को, जो सिर्फ मनुष्य था- जो न हिंदू था, न मुसलमान- क्या कुछ झेलना पड़ा, इसका अमूल्य दस्तावेज़ भीष्म साहनी और अमृता प्रीतम ने अपनी रचनाओं क्रमशः‘तमस’ एवं‘पिंजर’ में व्यक्त किया है।

स्वतंत्रता के बाद सांप्रदायिकता की समस्या ने दोनों संप्रदायों के पारस्परिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर दिया था। स्वार्थी राजनीतिज्ञों और अवसरवादी तत्वों ने दोनों संप्रदायों के बीच बढ़ती हुई दूरियों का फायदा उठाकर भारत ही नहीं, विश्व के अनेक देशों को हिला कर रख दिया दिया था।विभाजन और विस्थापन से दो धर्मों और संस्कृति के अंतर्संबंधों में जो बदलाव आया उसकी संवेदनात्मक अभिव्यक्ति ‘तमस’ और‘पिंजर’ में हुई है।

अपने शोध कार्य में मैंने पाया कि‘तमस’ उपन्यास में जहां विभाजन की त्रासदी के दौरान हुए सांप्रदायिक दंगों एवं उसके प्रभाव की झलक मिलती है तो वहीं ‘पिंजर’ उपन्यास मेंविभाजनके दर्द,

उसकी भयावहता और उससे उत्पन्न अन्य विकराल समस्याओं को बहुत सूक्ष्मता से सामने लाया गया है। इन दोनों रचनाओं में मूल्यों की खोज, गिरते-टूटते नैतिक मूल्य, विभाजन की विभीषिका, समाज में औरत की स्थिति, उसके संघर्ष और हाशिये पे आये हुए इंसानी रिश्तों के साथ, कट्टरता का पोषण और रूढ़ियों को बढ़ावा देने वाले समाज का जीवंत चित्रण हुआ है।

भारत में मुस्लिम समुदाय देश का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समूह है। लेकिन विभाजन की त्रासदी और उससे उत्पन्न सांप्रदायिकताकी भावना ने दोनों समुदायों के बीच परस्पर प्रेम और विश्वास के बंधन मजबूत होने ही नहींदिए। सांप्रदायिकता की भावना के कारण ही बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक का प्रश्न पैदा हुआ और आज तक बना हुआ है। हालाँकि विभाजन को हुए आधी सदी से ज्यादा का समय बीत गया है लेकिन वह एक जीवंत यथार्थ की तरह आज भी हमारे बीच कायम है। वह भय, हिंसा, असुरक्षा और अलगाव का जीता-जागता रूप बन चुका है। इस रूप में विभाजन की सबसे बड़ी त्रासदी तो यह रही कि साझे जीवन-मरण के बावजूद हिंदू-मुस्लिम दोनों ही समुदायों में एकता और सद्भाव का यह सम्बन्ध नहीं बन सका जिसकी अपेक्षा विभाजन से पूर्व की गयी थी।

1947 का बंटवारा कोई गयी गुजरी बात नहीं है। आज भी इस देश में ऐसे तत्व मौजूद हैं जो नए नारों के साथ 1947 को दुहराना चाहते हैं। आधुनिक जीवन में मूल्यों की बहुलता है। कभी-कभी प्राचीन मूल्य व्यवस्था को चुनौती देकर नए दर्शन की स्थापना करने में भी मूल्यों की यह बहुलता सहायक है। आधुनिक सन्दर्भ में आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक आदि जीवन-मूल्य की विकास प्रक्रिया के अनेक पहलू हैं। आधुनिक जीवन सन्दर्भ में अर्थ व्यवस्था के नए परिवर्तन ने मनुष्य को आर्थिक स्थिति के अनुसार विभाजित कर दिया। जीवन को आर्थिक दृष्टि से देखना, तोलना, नापना और अर्थ के अनुसार जीवन के मूल्यों का निर्धारण करना आदि अनेक बातों से समाज में बहुत सारी संकीर्णताओं का जन्म हुआ।